उत्तिष्ठ कौन्तेय!

पं. दीनदयाल उपाध्याय बलिदान दिवस
के सन्दर्भ में 10-11 फरवरी 2009
को आयोजित कृति-वर्ग एवं पुण्यस्मरण
समारोह का नवनीत

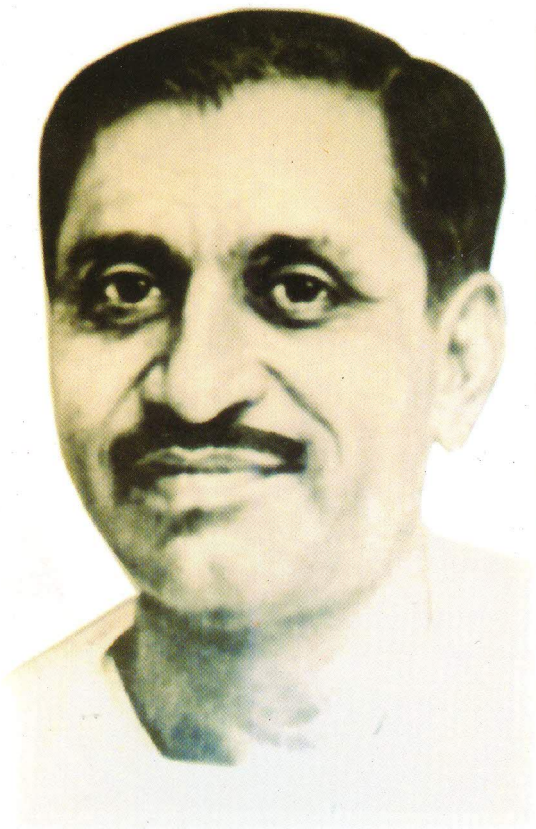

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

पराक्रमयुता प्रज्ञा राष्ट्राभ्युदयसाधिका
Wisdom with valour brings glory to the nation

उत्तिष्ठ कौन्तेय!

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय
के विचार-संकलन की पद्धति एवं पथ-निर्धारण हेतु
विद्वज्जनों के प्रबुद्ध विचार

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

पूर्व कथन

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी व पं. दीनदयाल उपाध्याय भारतीय मनीषा के युगपुरुष हैं। सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों से जुड़े कार्यकर्त्ताओं के लिए उन्होंने अनुकरणीय सूत्र प्रदान किए हैं, जिनका अनुसरण कर आज की पीढ़ी इस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का समुचित प्रयोग करते हुए समाजहित में ठोस व रचनात्मक कार्य कर सकती है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान की स्थापना का यही उद्देश्य है कि राष्ट्रीयता के वैचारिक प्रवाह को जीवंत बनाए रखते हुए समसामयिक सन्दर्भों में आवश्यक परिवर्तनों के साथ राष्ट्र की गौरवमयी परंपरा एवं इसके लिए समर्पित हुतात्माओं का स्मरण अक्षुण्ण रखा जाए। इसी क्रम में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान द्वारा दिनांक 10 एवं 11 फरवरी 2009 को आयोजित दो दिन की संगोष्ठी में प्रबुद्ध वक्ताओं द्वारा इन दोनों विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में प्रकट विचारों को यहाँ सूत्र रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है, यह मार्गदर्शक पाथेय सभी कार्यकर्त्ताओं एवं भारत हितचिंतक सामान्यजन हेतु प्रेरणास्पद सिद्ध होगा।

डॉ. हर्षवर्द्धन

सचिव, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

अपनी बात

पं. दीनदयाल उपाध्याय की 41वीं पुण्यतिथि पर नई दिल्ली में 10–11 फरवरी 2009 को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान द्वारा एक द्विदिवसीय वैचारिक अनुष्ठान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की वाणी, विचार, उन पर सृजित ग्रंथों एवं शोधकार्य के संकलन की पद्धति पर व्यापक विमर्श हुआ। दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित इस परिचर्चा में देशभर से आए राष्ट्रजीवन से जुड़े हुए विभिन्न महनीय विद्वानों ने अपने संचित अनुभव बाँटे एवं भविष्य में इस कार्य के लिए एक विस्तृत योजना की रूपरेखा पर चर्चा की।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान उस विमर्श का विवरण पुस्तक के रूप में इसलिए भी प्रकाशित कर रहा है ताकि वह अधिक–से–अधिक विचारकों के अनुशीलन हेतु उपलब्ध हो सके। इस प्रकार की कार्ययोजना के क्रियान्वयन से इन दोनों महापुरुषों के विचारों एवं कृतित्व से संपूर्ण समाज अधिक परिचित हो सकेगा और इन महापुरुषों के जीवन–संबंधी शोधकार्य से जुड़ी सामग्री एकत्रित करने में सुविधा हो सकेगी। इस कार्य में अनेक श्रेष्ठ विचारक एवं कार्यकर्त्ता पहले से ही कार्य कर रहे हैं। हमारा यह प्रयास उन सबके साथ एक गिलहरी के योगदान की भाँति ही है। आशा है, सुधी पाठकों से इस संदर्भ में मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त होगा।

इस अनुष्ठान में सभी मान्य वरिष्ठ मार्गदर्शकों एवं सहयोगियों के अप्रतिम स्नेहयुक्त सहकार के प्रति हम कृतज्ञ हैं। श्री केदारनाथ साहनी, श्री रामलाल, डॉ. हर्षवर्द्धन, श्री श्याम जाजू के दिशादर्शन व आत्मीय सहयोग के बल पर ही यह कार्य संभव हो पाया।

तरुण विजय
निदेशक, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

सभ्यतामूलक विमर्श एवं नीति अनुसंधान केंद्र

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान राष्ट्रवाद से संबंधित मुद्दों हेतु एक विमर्श केंद्र है। यह अधिष्ठान अभिनव खोज, शोध तथा सूक्ष्म स्तर पर कार्यकर्त्ताओं और अग्रणी पुरोधाओं के साथ अंतर्व्यवहार का कार्य करता है। आतंकवाद, विकास व भूमंडलीय तापन (ग्लोबल वार्मिंग) जैसे मुद्दों पर अधिष्ठान का विशेष ध्यान है।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रतीक और राष्ट्रीय अखंडता हेतु अपने प्राणों की आहुति देनेवाले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यस्मृति में स्थापित यह अधिष्ठान राष्ट्रवाद, आर्थिक विकास और भारतीय युवा की अभिलाषाओं को सम्मिलित करनेवाली हिंदू सभ्यता के लिए वैश्विक दृष्टि निर्मित करता है। उत्साही युवा पीढ़ी की आंतरिक शक्ति और कर्मठता के माध्यम से मृतप्राय रुढ़िवादी समाज में राष्ट्रहितार्थ नवीन दृष्टि प्रस्तुत करने का मुखर्जी–चिंतन ही इस अधिष्ठान के मूल में है।

उभरती हुई सामाजिक एवं राजनीतिक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर यह अधिष्ठान महिला सशक्तीकरण एवं भारतीय भाषाओं के सिकुड़ते क्षेत्र जैसे विषयों पर शोधकार्य हेतु प्रयासरत है। प्रत्यक्ष रूप से अनेक मंचों पर जिन मुद्दों पर ध्यान दिया जाता है, उनमें राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए चुनौतियाँ, अणु शस्त्रों के न्यायपूर्ण निःशस्त्रीकरण तथा अमरीका, यूरोप, जापान, चीन, दक्षेस देशों और दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों से संबंध–सरोकार सम्मिलित हैं।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान आधुनिक अनुसंधान और व्याख्यान लेखों का संगोष्ठियों, सभाओं तथा सार्वजनिक व्याख्यानों द्वारा प्रचार करने की दिशा में प्रयत्नशील है। हम शोधकर्त्ताओं और विशेषज्ञों के स्तरीय लेख और समकालीन मुद्दों पर केंद्रित प्रकाशन को समुचित प्रोत्साहन देते हैं।

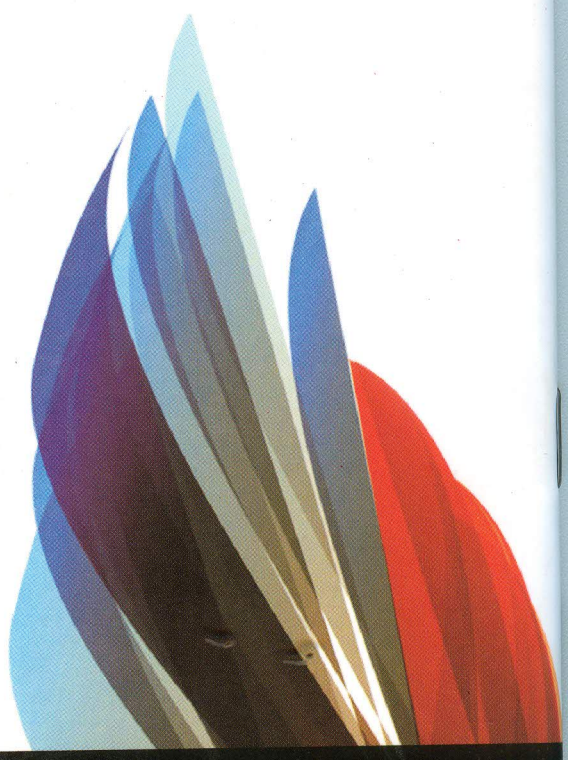

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान, 11,अशोक रोड, नई दिल्ली–110001

दूरभाष: 011–23005714 / 35, टेलीफैक्स : 011–23382569, अणुडाक : director @indiannationalism.org

अंतःक्षेत्र (Websites) : www.indiannationalism.org, www.theideology.org, www.deendayalupadhyaya.org, www.drsyamaprasadmookerjee.org